Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

Original Article

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में विष्णु पुराण का महत्व

Dr.Lakshmi.V
Assistant Professor, Dept.of Indian Languages Ramaiah College of Arts, Science and Commerce Bengaluru.
Email- lakshmiv_lang@ msrcasc.edu.in

Manuscript ID:
JRD -2025-170923
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 9(A)
Pp.113-115
September 2025
Submitted:23 Aug. 2025
Revised: 4 Sept. 2025
Accepted: 21 Sept. 2025
Published: 30 Sept. 2025

सारांश:

विष्णु पुराण केवल पौराणिक कथाओं का संग्रह नहीं, बल्कि एक जीवन-दर्शन, नैतिकता, धर्म, और समाज व्यवस्था का गहन मार्गदर्शक ग्रंथ है। आधुनिक युग में, जब मानव भौतिक प्रगति के बावजूद मानसिक शांति और नैतिक संतुलन की खोज में है, तब विष्णु पुराण के विचार अत्यंत प्रासंगिक हो जाते हैं। इसमें आत्मशुद्धि, कर्तव्य पालन, धर्म, भक्ति, संयम, परिवार की एकता, शासन की नीति, पर्यावरण संरक्षण और स्त्री के सम्मान जैसे विषयों पर गहन विचार किया गया है। यह ग्रंथ व्यक्ति को आंतरिक शांति, नैतिकता, और जीवन की सार्थकता की दिशा में प्रेरित करता है। विष्णु पुराण के सिद्धांत समयातीत हैं — जो हर युग में मानवता को धर्म, सत्य और संयम के मार्ग पर अग्रसर करते हैं।

मुख्य शब्द: *विष्णु पुराण, धर्म, भक्ति, नैतिकता, संयम, पर्यावरण संरक्षण, परिवार व्यवस्था, शासन नीति, स्त्री सम्मान, आत्मशुद्धि, कर्मयोग, समाज सुधार, जीवन दर्शन, आध्यात्मिकता, आधुनिक प्रासंगिकता.*

प्रस्तावना

भारत इतिहास और पुराणों का देश है। यह इतिहास और पुराण मंत्र कहानी नहीं बल्कि मनुष्य के जीवन के साथ जुड़ी हुई है। आज भी उनका महत्व उतना ही है जितना सालों पुराना था। भारत की विशेषता है कि हम आज भी इन इतिहासों और पुराने को प्राणों पर विश्वास करते हैं और उनको हमारे जीवन के साथ जोड़ने की कोशिश करते हैं। यह सच है कि आज के समय में हम पाश्चात्य जीवन की ओर ज्यादा अधिक आकर्षित हो रहे हैं लेकिन हमारे पुराने का जो हमारे जीवन में उनका प्रभाव है आज भी काम नहीं हुआ है।

विष्णु पुराण एक ऐसा ग्रंथ है जो केवल पौराणिक गाथाओं या धार्मिक कथाओं का संग्रह नहीं है बल्कि यह एक जीवन दर्शन नैतिकता धर्म और समाज व्यवस्था का गहराई से मार्गदर्शन करता है। आधुनिक युग जो तकनीक विज्ञान और भौतिक प्रगति के बावजूद आंतरिक शांति नैतिक मूल्यों और समाज में संतुलन की खोज कर रहा है ऐसे समय में विष्णु पुराण की प्रासंगिकता और भी अधिक बढ़ जाती है। हम जितनी तेजी से आगे बढ़ते जाते हैं उतना ही हमारे जो मूल है उसकी गहराई तक ले जाने की कोशिश करते रहते हैं।

विष्णु पुराण में सृष्टि की रचना मन्वंतर काल गणना नक्षत्र ज्ञान लोगों की स्थिति आदि का विस्तार से वर्णन है। आज वैज्ञानिक भी अपनी खोजने के लिए विष्णु पुराण के तथ्यों पर तथ्यों की सहायता का संदर्भ लेते हैं।

विष्णु पुराण में कहां गया है कि एक मन्वंतर में 306520000 मानव वर्ष होते है। इस तरह के आंकड़े दर्शाते हैं कि भारतीय मनुष्यों की ब्राह्मणी चेतना और समय के व्यापक दृष्टिकोण की समझ कितनी उन्नत थी। आज जब विज्ञान अंतरिक्ष और टाइम तैयारी को समझ रहा है तब भी विष्णु पुराण की यह विचार फिर से अध्ययन योग्य बन जाते हैं।

मानसिक शांति और आध्यात्मिक मार्गदर्शन

वर्तमान समय में व्यक्ति के पास भौतिक सुख-सुविधाएँ हैं, लेकिन आंतरिक शांति नहीं है।

विष्णु पुराण भक्ति, आत्मा, और ईश्वर के साथ संबंध को केंद्र में रखता है, जिससे व्यक्ति आध्यात्मिक मार्ग पर चलकर शांति प्राप्त कर सकता है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
Dr.Lakshmi.V, Assistant Professor, Dept.of Indian Languages Ramaiah College of Arts, Science and Commerce Bengaluru.

How to cite this article:
Lakshmi.V. (2025). आधुनिक परिप्रेक्ष्य में विष्णु पुराण का महत्व. Journal of Research and Development, 17(9(A)), 113–115. https://doi.org/10.5281/zenodo.17510784

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17510784
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

उदाहरण:

"आत्मा शुद्ध, आनंदमय और ज्ञानस्वरूप है। दु:ख, मोह और अज्ञान उसके ऊपर थोपी हुई अवस्थाएँ हैं।"

यह विचार व्यक्ति को आत्मा की शुद्धता समझने में मदद करता है, जिससे मानसिक तनाव, अवसाद और जीवन की उलझनों में समाधान मिलता है।

परिवार और समाज की एकता की शिक्षा

विष्णु पुराण में गृहस्थ धर्म, विवाह, संतान पालन, श्राद्ध, धर्म पालन आदि पर गहराई से विचार किया गया है।

आज जहाँ परिवार टूट रहे हैं, पीढ़ियों में दूरी बढ़ रही है, वहां यह ग्रंथ पारिवारिक मूल्यों को फिर से सुदृढ़ करने का माध्यम बन सकता है।

उदाहरण:

"गृहस्थ वही है जो अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए समाज और आत्मा दोनों की सेवा करे।"

यह संदेश स्पष्ट करता है कि धर्म का पालन केवल पूजा से नहीं, बल्कि कर्तव्यनिष्ठा से होता है।

शासन और नेतृत्व के लिए नीति मार्गदर्शन

विष्णु पुराण में कई ऐसे प्रसंग हैं जहाँ राजा और शासन की भूमिका बताई गई है — कि एक शासक कैसा हो, उसमें क्या गुण हों:

"राजा वह है जो धर्म से राज्य करता है, प्रजा को कष्ट नहीं देता और न्याय करता है।"

आज के राजनेताओं, प्रशासकों और सामाजिक नेताओं के लिए ये उपदेश राजनीतिक शुचिता और नैतिक नेतृत्व का मार्गदर्शन कर सकते हैं।

प्रकृति और पर्यावरण की रक्षा की भावना

विष्णु पुराण में पृथु राजा की कथा आती है, जहाँ वे धरती को दुहने योग्य बनाते हैं और कहते हैं:

"पृथ्वी माता है, उसका अपमान या शोषण पाप है।"

आज जब पर्यावरण संकट चरम पर है — वनों की कटाई, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन — वहां यह संदेश पर्यावरण संरक्षण की दिशा में प्रेरणा देता है।

महिलाओं की भूमिका और मर्यादा

हालाँकि विष्णु पुराण का समय आज से हजारों वर्ष पुराना है, फिर भी उसमें महिलाओं के धर्म, अधिकार और मर्यादा की चर्चा है।

एक उदाहरण में कहा गया है:

"स्त्री जो अपने पति, परिवार और धर्म की सेवा मन, वचन, और कर्म से करती है, वह पृथ्वी पर ही स्वर्ग को प्राप्त करती है।"

हालाँकि आज के संदर्भ में इसे सम-सम्मान और अधिकार की दृष्टि से देखने की आवश्यकता है, पर यह स्पष्ट करता है कि समाज में स्त्री का स्थान महत्त्वपूर्ण रहा है।

कर्मयोग और जीवन की सार्थकता

विष्णु पुराण सिखाता है कि केवल ध्यान करने या पूजा करने से जीवन सफल नहीं होता, बल्कि कर्तव्य पालन आवश्यक है।

"जो व्यक्ति कर्म करता है लेकिन फल की इच्छा नहीं करता, वही वास्तविक योगी है।"

यह गीता के कर्मयोग से मिलता-जुलता विचार है और वर्तमान कार्यसंस्कृति, नौकरी, व्यापार या सामाजिक सेवा से जुड़े लोगों के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

भक्ति, संयम और सच्चा धर्म

भक्ति केवल पूजा नहीं है, यह स्वधर्म पालन, कर्तव्य, ईमानदारी, और दयालुता है।

प्रह्लाद, ध्रुव जैसे पात्रों की कथाएं यह सिखाती हैं कि भक्ति में शक्ति है और वह हमें ईश्वर के मार्ग पर बनाए रखती है।

आज जब धर्म को केवल बाहरी कर्मकांडों में बांधा जा रहा है, विष्णु पुराण अंदर से धर्म का सार समझने में मदद करता है।

विष्णु पुराण का सबसे बड़ा गुण यह है कि इसके विचार कालातीत हैं — अर्थात समय से परे हैं।

- भले ही युग बदल गया हो, विज्ञान ने तरक्की कर ली हो,
- किंतु क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, अधर्म — आज भी वैसा ही है।
- धर्म, भक्ति, संयम, सेवा, सत्य — आज भी उतने ही मूल्यवान हैं।

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

इसलिए यह ग्रंथ केवल सनातन धर्म के अनुयायियों के लिए नहीं, बल्कि हर उस व्यक्ति के लिए है जो एक शांतिपूर्ण, नैतिक और सार्थक जीवन जीना चाहता है।
नैतिक और चारित्रिक पतन में सुधार का साधन
आज का युग तेजी से नैतिक पतन की ओर अग्रसर है
भ्रष्टाचार
स्वार्थपरता
असत्य
हिंसा
लालच
विष्णु पुराण इन सभी दुर्गुणों का स्पष्ट विरोध करता है। उदाहरण स्वरूप:

“काम, क्रोध और लोभ — ये तीन नरक के द्वार हैं। इन्हें त्याग देना चाहिए।”

(*Vishnu Purana Quote*)

यह उपदेश आज के व्यक्ति को आत्मनिरीक्षण करने, जीवन में संयम लाने और नैतिक मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित करता है।

आधुनिक समय में विष्णु पुराण का महत्व अत्यंत व्यापक है — यह न केवल धार्मिक ग्रंथ है, बल्कि एक व्यक्तित्व-विकास का मार्गदर्शक, नैतिक शिक्षा का स्रोत, और आध्यात्मिक ऊर्जा का केंद्र है

निष्कर्ष

विष्णु पुराण हमें सिखाता है:

- सत्य और धर्म पर टिके रहो,
- क्रोध, लोभ, मोह को छोड़ो,
- आत्मा को पहचानो, और
- जीवन को कर्तव्य, भक्ति और प्रेम से पूर्ण बनाओ।

आज के जटिल, तनावपूर्ण, और दिशाहीन जीवन में विष्णु पुराण एक अमूल्य प्रकाश-पुंज है।

विष्णु पुराण में उल्लिखित श्लोक जैसे —

“काम, क्रोध और लोभ — ये तीन नरक के द्वार हैं। इन्हें त्याग देना चाहिए।” — आज के युग में भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने सहस्त्रों वर्ष पहले थे।

यह ग्रंथ सार्वकालिक है — समय से परे, संस्कृति से ऊपर, और मानव कल्याण के लिए अनंत प्रेरणास्त्रोत है।

संदर्भ ग्रंथ

पुराणों में विष्णु” – हरिशंकर शर्मा
विष्णु पुराण – हिन्दी व्याख्या सहित” – हनुमान प्रसाद पोद्दार
विष्णु पुराण का अध्ययन” – डॉ. शंभुनाथ शुक्ल